श्रद्धात्रयविभागयोग

(श्रद्धा के तीन भेद)

अर्जुन उवाच।

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः।।१।।

अर्जुनः उवाच=अजुर्न ने कहा; **ये**=जो; **शास्त्रविधिम्**=शास्त्रविधि को; **उत्सृज्य**=त्याग कर; **यजन्ते**=पूजते हैं; **श्रद्धयान्विताः**=पूर्ण श्रद्धा से युक्त हुए; **तेषाम्**=उनकी; **निष्ठा**=स्थिति; **तु**=तो; **का**=कौन सी है; **कृष्ण**=हे कृष्ण; **सत्त्वम्**=सात्त्विकी; **आहो**=अथवा; **रजः**=राजसी (या); **तमः**=तामसी।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे कृष्ण! जो मनुष्य शास्त्र-विधि को तो नहीं मानते, परन्तु अपनी कल्पना के अनुसार श्रद्धासहित यजन करते हैं, उनकी स्थिति कौन सी है? क्या वे सत्त्वगुण में हैं अथवा रजोगुण में हैं या तमोगुण में हैं?।।१।।

तात्पर्य

चौथे अध्याय के उनतालिसवें श्लोक में उल्लेख अनुसार किसी उपासना-विशेष का श्रद्धालु शनैः-शनैः ज्ञान में आरूढ होकर शान्ति और समृद्धि की परमसिद्धि को